इन्टरव्यू ३५

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम पप्पू है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 20-22 साल है।

प्र: बुनकारी में कब से हैं ?
ज: वहीं 12 साल से।

प्र: आप अपने करघे पर बिनते हैं कि मजदूरी करते हैं ?
ज: मजदूरी करते हैं। करघा हमारा है मगर मजदूरी करते हैं।

प्र: मतलब- कतान तानी ये सब मजदूरी पर लाते हैं ?
ज: हां।

प्र: किससे लाते हैं ?
ज: व्यापारी से, जो बिनवाते हैं।

प्र: डिजाइन भी वहीं देते हैं ?
ज: हां, अपनी भी रहती है उनका भी रहता है।

प्र: एक साड़ी की कितनी मजदूरी देते हैं ?
ज: बहुत कम रहता है वही 400-350 सौ रुपया एक साड़ी की।

प्र: महीने में कितनी साड़ी बिनते हैं ?
ज: वहीं तीन साड़ी। महीने में।

प्र: आपका कितना होता होगा ?
ज: बस ढ़ेड़-दो हजार तक खींचना पड़ता है किसी भी हाल में।

प्र: काम हमेशा मिलता रहता है ?
ज: हां, कभी-कभी परेशानी होती है मई-जून के महीने में।

प्र: क्यों किस कारण से ?
ज: गर्मी की दुरी रहती है, गर्मी पड़ती है लाइट नहीं रहती। पावर की परेशानी है ना इसके बाद बाजार भी मंदा रहता है जब त्यौहार आती-दशमी दीवाली तो बाजार टाइट रहता है। तभी ज्यादा काम मिलता है।

प्र: आपके घर सभी बुनकारी करते हैं ?
ज: हां, दो-तीन भाई है।

प्र: अपने ही करघे पर बिनते है ?
ज: हां, लेकिन मजदूरी करते हैं।

प्र: कितना करघा है ?
ज: दो-तीन

प्र: आपका परिवार संयुक्त है साथ ही रहता है ?
ज: हां सब साथ ही में हैं 10 आदमी का परिवार है साथ ही रहता है। 10-12 आदमी।

प्र: बुनाई करने वाले कितने हैं ?
ज: बस तीन आदमी जितना करघा रहेगा उतने ही बिनने वाले भी होंगे और छोटे-छोटे हैं।

प्र: घर चल जाता तीन आदमी की कमाई से ?
ज: क्या करे चलना पड़ता है नहीं चलायेंगे तो कैसे चलेगा।

प्र: ये तीनों करघा आपका आपके अब्बू का या आपका ?
ज: नहीं हमारे दादे का था।

प्र: तब से इतना ही था या कुछ घटा बढ़ा ?
ज: बढ़ा, पहले एक ही था जिसपर हमारे वालिद साहब काम करते थे जब हम लोग बड़े-बड़े हुए तो हम लोग नया बैठाये।

प्र: आपके छोटे भाई जब बड़े होंगे तो उनके लिए भी करघा लगाना होगा ?
ज: जगह रहेगी तभी ना बढ़ेगा नहीं तो बाहर जा कर बिनना पड़ेगा। जैसे अभी यहां कोई काम नहीं कर रहा है तो ये पड़ा है ना।

प्र: अभी आपके जमीन पर ये करघा है ?
ज: हां।

प्र: जब से आप इसमें है आने 10-12 साल से तब से बुनकारी में सुधार आयी है या गिरावट ?
ज: बहुत गिरावट आई है, सुधार क्या होगा।

प्र: किस रूप में गिरावट आई है, रेशम मंहगा हो गया है या साड़ी नहीं बिकती ?

ज: साड़ी बिकने का सवाल नही हैं, बाजार रहता है तभी साड़ी बिकती है नहीं तो कभी तार मंहगा रेशम मंहगा, ताना मंहगा ये सब चलता रहता है। इस वक्त ज्यादे नुकसान हो रहा है फायदा कम।

प्र: कितने साल से ये स्थिति है ?
ज: वही लगभग अठानबे से खराब हुई। और अभी तब खराब ही चल रही है। ये साड़ी है इसको बनाने में 15 दिन 10 दिन लगता है। लेकिन बिकेगी 2000रुपये की।

प्र: तो क्या-क्या कारण है कि जिस कारण स्थिति खराब होती जा रही है ?
ज: क्या बताए आज आतंकवादी लोग ऐसे फैल गए है कि कोई कहीं जाना नहीं पसंद कर रहा है सबसे बड़ी बात कहीं जाए आदमी तो जान हथेली पर लेकर जायें। इसी सब से ये ठप हो गया है। चली नही रहा। बाहर माल बनाये विदेशों में तब ना।

प्र: आपको मजदूरी 350 मिलती है लेकिन जब व्यापारी बेचते होंगे वो कितने में बेचेंगे ?
ज: वहीं 50 रुपया अधिकर के या 400-450 में बेचेंगे और क्या।

प्र: वो किसको बेचेंगे ?
ज: आप लोगों को बेचेंगे वो आज पब्लिक को बेचते हैं या बड़े व्यापारी को देते हैं।

प्र: आपके यहां कोई समिति है ?
ज: हां है एक चल रही है इस वक्त। लेकिन उसमें बहुत तिकड़म बाजी हो रही है। आदमी का पास होता है 2000रुपया लेकिन मिलता 600रुपया है।

प्र: किस नाम से है समिति ?
ज: ये नही बता सकते क्योंकि हम उसके मेम्बर नहीं है।

प्र: वो समिति क्या काम करती है ?
ज: जैसे रेशम की बात होती है तो व्यापार मण्डल समिति बैठाते है तो वही सब में...हम नहीं जाते उसमें क्योंकि जब सही काम हो तो कोई जाये भी अब गलत काम हो उसमें क्या जायें।

प्र: बुनकरों के लिए कुछ काम करते हैं या नहीं ?
ज: नहीं कुछ नहीं करते, बस पैसा आया खाना से मतलब रखते हैं।

प्र: लेकिन उसके बहुत से मेम्बर होते हैं ?
ज: हो बहुत से है, अब हम लोग हैं एक घटां काम छोड़कर चले जाते हैं ऐसे बहुत से लोग है।

प्र: आप में से कोई उसका मेम्बर नही हैं ?
ज: नहीं।

प्र: रेशम पर आपको कोई सब्सीडी मिलती है ?
ज: नहीं, रेशम का दाम सोना से ज्यादा बढ़ता है आज 100 है तो कल 500 में हो जायेगा।

प्र: रेशम पर कोई छूट नहीं हैं ?
ज: नहीं कोई छूट नहीं है।

प्र: आप लोगों को कभी ऋण लेना हो तो कहां से लेते हैं ?
ज: पैसे के बहुत ज्यादे जरूरत पड़ी तो व्यापारी के यहां जाते हैं, व्यापारी दिया तो ठिक नहीं तो नहीं। बैठ जाते हैं।

प्र: बैंक से नहीं लेते ?
ज: नहीं।

प्र: जानते हैं कि नही कि ऋण बैंक से मिलता है ?
ज: जानते है।

प्र: तो लेवे क्यों नहीं ?
ज: फायदा कैसे उठायेंगे जीतना लेंगे उससे ज्यादा देना पड़ेगा ना। ब्याज देना पड़ेगा। टाईम नहीं दिए तो दुगना देना होगा। व्यापारी से बिना ब्याज में लेते हैं। चाहे पटाने में साल दू साल लग जाये।

प्र: आगे भी इसी काम में रहने का सोच रहे हैं ?
ज: नहीं, हम लोग तो कोई दूसरा काम करने की सोच रहे है क्योंकि इसमें कोई प्रॉफिट नही हैं। इस वक्त जो पोजिशन चल रही है उससे बहुत परेशानी है। बिजली का भारी बिल देना पड़ता है।

प्र: अच्छा बिजली पर भी कोई छूट नहीं है ?
ज: नहीं, उसी रेट में मिलती है। उससे भी परेशानी है। पुलिस आती है मारपीट करती है। हर घर में बकाया जो है ये उस करघे से कैसे पटेगा। हजार रुपये महिने में कैसे पटेगा।

प्र: आप किस काम में जाना चाहते हैं ?
ज: देखीये तकदीर जिसमें ले जायें।

प्र: बुनकारी से ही से बधीत या किसी अन्य काम में जायेंगे ?
ज: हम लोगों का तो काम यही है। इसी में रहेंगे लेकिन थोड़ा अंतर आयेगा जैसे इस वक्त इसकी पोजिशन खराब है तो दूसरा काम करेंगे।

प्र: आप का कोई और स्रोत है मतलब खेत, दुकान कुछ भी ?
ज: नहीं, इसी पर है जो आदमी ये करता हे उसकी पीढ़ी यही करती है। सभी का यही है।